ISSN: 2582-7162

लेख

स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन

रितु[1], नितिन[2]

[1]पीएच0डी0 शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।
[2]सहायक प्रवक्ता, शिक्षा संकाय, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।

Corresponding author: रितु एपीएच.डी. शोधकर्ता, शिक्षा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक।
Email: ritud0234@gmail.com

प्रस्तावना

यह अध्ययन स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दृष्टिकोण को समझने का एक प्रयास है। इस अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। इन स्रोतों में स्वामी विवेकानंद के भाषण, उनकी लिखित पुस्तकें, और विभिन्न लेखकों द्वारा उनके विचारों पर किए गए कार्यों को संकलित किया गया है। इससे पता चलता है कि स्वामी विवेकानंद ने मानव विकास के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को गति देने के लिए जोर दिया। उनका सन्देश मानवता, धार्मिकता, एकता, त्याग, शिक्षा, और सेवा पर आधारित था। उनकी शिक्षाएं आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण, समृद्धि के लिए सक्रिय जीवन, और समाज सेवा को महत्त्व देती थीं। वे ब्रह्मचर्य के महत्त्व को भी स्थापित करते थे और समृद्धि का आधार बनाने के लिए ज्ञान और श्रद्धा का महत्त्व बताया। उनकी सोच राष्ट्रीय एकता, मानवता, और समृद्धि की दिशा में एक सामाजिक संदेश लेकर आई थी।

मुख्य शब्द : शिक्षा, दर्शन, मानवता, चरित्र निर्माण, शिक्षा प्रणाली, समाज सेवा

SDES- International Journal of Interdisciplinary Research is a journal of Open access. In this journal, we allow all types of articles to be distributed freely and accessible under the terms of the creative common attribution- non commercial-share. This allows the authors, readers and all scholars and general community to understand, use and to develop non-commercially work, as long as appropriate credit is given and the newly developed work are licensed with similar terms.

How to cite this article: रितुए नितिन स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन SDES-IJIR; 2023; 4-6: 737-741
Submitted: 26-December-2023; **Accepted:** 29 -December-2023; **Published:** 8-January-2024

भूमिका

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता के शिमला मोहल्ला में विश्वनाथ दत्त और भुवनेश्वरी की पहली सन्तान रूप में हुआ था। पहले उनका नाम नरेंद्र नाथ था, और उन्हें अनेक क्षमताओं से नवाजा जाता था। विज्ञान के छात्र होते हुए भी, उन्हें कविता और दर्शन में गहरी रूचि थी। उनकी गहरी बुद्धि ने पश्चिमी विचारकों जैसे स्ट्यूअर्ट मिल और हर्बर्ट स्पेंसर की दार्शनिक सिद्धांतों को अध्ययन किया। उनके कॉलेज के प्रिंसिपल, मिस्टर हेस्टी, को उनकी प्रतिभा ने गहरा प्रभावित किया, उन्होंने कहा कि उन्होंने बहुत से प्रतिभाशाली लोगों से मिला है, लेकिन किसी में भी नरेंद्र जैसी क्षमता नहीं देखी। हेस्टी ही ने नरेंद्र को रामकृष्ण परमहंस से मिलने के लिए प्रेरित किया। जब उन दोनों मिले, तो नरेंद्र ने पूछा कि क्या रामकृष्ण ने भगवान को देखा है, जिसका शांत उत्तर मिला, "हाँ, जैसे मैं तुम्हें देखता हूँ," और उन्होंने अपने दाहिने पैर को नरेंद्र के शरीर पर रखा। उस पल में, नरेंद्र को महसूस हुआ कि पूरा संसार घूम रहा है और एक शून्य में विलीन हो रहा है, और भय के साथ चीख उठी। रामकृष्ण ने हंसते हुए कहा, "ठीक है, अब शांत हो जाओ।" यह घटना ने पूरी तरह से नरेंद्र नाथ को परिवर्तित कर दिया।

धीरे–धीरे, वे रामकृष्ण परमहंस के पास आए। अपने गुरु के आध्यात्मिक शिक्षा का पालन करते हुए, नरेंद्र ने अपने घरेलू जीवन को छोड़कर एक संन्यासी का जीवन अपनाया और बारानगर में एक आश्रम स्थापित किया, जहां उन्होंने अपने गुरु का संदेश फैलाया। अपनी पहचान छिपाने के लिए, उन्होंने अपना नाम कई बार बदला, और अमेरिका जाने के दौरान 'पार्लियामेंट ऑफ

रिलीजन्स' में भाग लेने के दौरान आखिरकार 'विवेकानंद' नाम अपनाया। यह नाम बाद में पूरे विश्व में मशहूर हो गया। उनके अमेरिका में भाषणों को बहुत प्रशंसा मिली, और वे यूरोप, विशेषकर इंग्लैंड और अमेरिका में कई यात्राएं करते रहे, हिंदू धर्म और वेदांत के संदेश को फैलाते रहे। भारत लौटने पर, स्वामी विवेकानंद ने 'बेलूर मठ' और 'अद्वैत आश्रम' की स्थापना की, जहां से मानव सेवा और दिव्य पूजा का संदेश भारतवासियों और पूरे विश्व में फैलाया। 4 जुलाई, 1902 में, यह महान आत्मा इस संसार से विदा ले गई, महान आध्यात्मिक ज्ञान और मानवता की सेवा की एक विरासत छोड़कर (शर्मा, 2000)।

वास्तव में स्वामी जी ऐसी शिक्षा चाहते थे जिसमें व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो। स्वामी जी का कहना है कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने, मानसिक वीर्य का विकास हो, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके। हमें आवश्यकता इस बात कि है हम विदेशी अधिकार से स्वतन्त्र रहकर अपने निजी ज्ञान भण्डार की विभिन्न शाखाओं का और उनके साथ ही अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विज्ञान का अध्ययन करें। हमें यान्त्रिक और ऐसी सभी शिक्षाओं की आवश्यकता है जिनसे उद्योग–धन्धों की वृद्धि हो और विकास हो, जिससे मनुष्य नौकरी के लिए मारा–मारा न फिरे और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त मात्रा में धन कमा सके और आपात्काल के लिए संचय कर सके" (स्वामी विवेकानन्द, 1897)। स्वामी जी ने मानव निर्माण के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों पर बल दिया है–

(क) शारीरिक विकास

स्वामी विवेकानन्द जी भौतिक जीवन की रक्षा और आध्यात्मिकता की अनुभूति के आधार तत्त्वों ज्ञान, भक्ति और योग के लिए शरीर के महत्त्व को स्वीकार करते थे। स्वामी जी लिखते हैं कि सबसे पहले हमारे युवकों को सबल बनाना चाहिए। धर्म तो बाद की चीज है। तुम गीता पढ़ने की बजाय फुटबाल खेलकर स्वर्ग के अधिक निकट पहुँच सकते हो। यदि तुम्हारा शरीर स्वस्थ है तो अपने पैरों पर दृढ़तापूर्वक खड़े हो सकते हो। यदि तुम अपने भीतर मानव शक्ति का अनुभव कर सकते हो तो तुम उपनिषदों और आत्मा की महत्ता को अधिक अच्छी प्रकार समझ सकते हो (विवेकानन्द, 1907)।

(ख) बौद्धिक विकास

मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी बुद्धि ही है। स्वामी जी इस तथ्य को स्वीकार करते थे और मनुष्य के बौद्धिक विकास पर बल देते थे। स्वामी जी के अनुसार बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भाषा, गणित, विज्ञान, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, खगोलशास्त्र, जीवविज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र तथा तकनीकी आदि सभी विषयों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि इन विषयों के अभाव में देश को आत्मनिर्भर नहीं बनाया जा सकता।

(ग) एकाग्रता की शक्ति का विकास

स्वामी जी का मानना है कि मनुष्य में एकाग्रता की शक्ति जितनी अधिक होगी, वह उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मनुष्यों और पशुओं में मुख्य भेद एकाग्रता की शक्ति को लेकर है। सबसे नीच मनुष्य की उच्चतम मनुष्य के साथ तुलना करें तो दोनों में भेद एकाग्रता की मात्रा को लेकर होगा। किसी कार्य की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि उसे कितनी एकाग्रता से किया जाता है। कला–संगीत आदि में बहुत अधिक प्रवीणता प्राप्त कर लेना इसी एकाग्रता का फल है (स्वामी विवेकानन्द, 1907)।

(घ) आध्यात्मिक विकास

स्वामी विवेकानन्द मनुष्य जीवन का अन्तिम उद्देश्य आत्मज्ञान को मानते हैं। आत्मज्ञान एवं भौतिक जीवन की जिन आवश्यकताओं की पूर्ति पर स्वामी जी ने बल दिया है, उनका अन्तिम लक्ष्य भी आध्यात्मिक ही है। आध्यात्मिक गुणों के विकास के लिए आवश्यक है कि मनुष्य में धार्मिक गुण, श्रद्धा का भाव तथा चरित्र का विकास हो। अतः आध्यात्मिक विकास के इन तीनों तत्त्वों पर विचार करना आवश्यक है।

(ड) मनुष्य को धार्मिक बनाना

विवेकानन्द कहते हैं कि धर्म शिक्षा का मेरूदण्ड है। लेकिन यह धर्म वह है जो सर्वधर्म सम्मत हो। स्वामी जी कहते हैं कि अब हमें अधिक आवश्यकता है ऐसे वीर के आदर्श की जिसके वक्ष में सिर से पैर तक प्रबल रजोगुण फड़कता हो, जो सत्य को जानने के लिए मृत्यु का सामना करते न हिचके, जिसकी ढाल वैराग्य हो और तलवार बुद्धि। हमें अभी आवश्यकता है युद्ध क्षेत्र के साहसी हृदय योद्धा की।"

3. चरित्र निर्माण

स्वामी जी का विश्वास था कि जब तक मनुष्य में धार्मिक चेतना का विकास नहीं होता तब तक उसका चारित्रिक एवं नैतिक विकास नहीं हो सकता। अतः भावी नागरिकों की शिक्षा चरित्र निर्माण के सुदृढ़ आधार पर होनी चाहिए। स्वामी जी ने चरित्र के संबंध में कहा था कि आज हमें जिसकी वास्तविक आवश्यकता है वह है चरित्रवान स्त्री, पुरूष। किसी भी राष्ट्र का विकास और उसकी सुरक्षा मुख्यतः उसके चरित्रवान नागरिकों पर निर्भर है (स्वामी विवेकानन्द, 1907)।

(च) आत्मविश्वास का विकास

स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा में आत्मविश्वास के विकास पर बहुत बल देते हैं। वे कहते हैं कि इस बात को अच्छी तरह समझ लो कि जो मनुष्य दिन–रात यह सोचता रहता है कि मैं कुछ भी नहीं हूँ तो हमें उससे कोई आशा नहीं रखनी चाहिए। यदि कोई दिन–रात यह सोचता है कि मुझ में शक्ति है तो वास्तव में उसमें शक्ति आ जायेगी। यह एक महान् सत्य है जिसे तुम्हें याद रखना चाहिए।

(छ) जीविकोपार्जन की शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द जी बालकों को जीवन संघर्ष के लिए तैयार करने की शिक्षा पर बल देते हैं ये तथा इसके लिए तकनीकी व विज्ञान की शिक्षा आवश्यक मानते हैं। स्वामीजी के अनुसार जो कोई प्रकृति के विरूद्ध लड़ता है उसमें ही चैतन्य का विकास है।

(ज) पूर्णता प्राप्ति का उद्देश्य

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार पूर्णता की स्थिरता भी शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। प्रत्येक बच्चे में कुछ छिपी हुई शक्तियाँ होती हैं। शिक्षा उन शक्तियों को विकसित करने तथा स्थिर करने में सहायता प्रदान करती है।

(झ) विश्वात्मक भ्रातृत्व का विकास

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार "शिक्षा विश्वात्मक भ्रातृत्व विकसित करने का साधन है। शिक्षा को सिखाना चाहिए कि सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का वास है। इस प्रकार की भावना उत्पन्न करने वाली शिक्षा ही उपयोगी शिक्षा है। स्वामी विवेकानन्द के कथनानुसार, व ऊँची से ऊँची वस्तु से लेकर छोटी से छोटी घास तक सभी में एक ही शक्ति विद्यमान है।"

(ञ) त्याग भावना का विकास

शिक्षा को मनुष्य में त्याग भावना उत्पन्न करनी चाहिए। त्याग भावना के बिना व्यक्ति दूसरों के लिए काम नहीं कर सकता। शिक्षा द्वारा मनुष्य में यह भावना भरी जानी चाहिए। 'हम सब संसार के ऋणी हैं। संसार ने अब हमें कुछ देना नहीं। संसार के लिए कुछ कर सकने में ही मनुष्य का महत्त्व है।

(ट) विविधता में एकता की खोज

स्वामी विवेकानन्द का विश्वास है कि विविधता में एकता की खोज करना शिक्षा का उद्देश्य है। उनके विचारानुसार भौतिक और आध्यात्मिक विश्व में एकता है। ब्रह्म भी एक है। उन्होंने भौतिक और आध्यात्मिक आदर्शों में समन्वय स्थापित किया है। शिक्षा द्वारा मनुष्य में 'विविधता में एकता' ढूंढने की योग्यता का विकास होना चाहिए।

(ठ) मानव निर्माण

स्वामी जी शिक्षा का प्रयोजन मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवन निर्माण मानते थे। उन्होंने कहा था : "हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो। स्वामी जी का कहना है, यदि तुम केवल पांच परखे हुए विचार आत्मसात् कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हो, तो तुम एक पूरे शिक्षित हो।

(ड) बौद्धिक विकास

बौद्धिक विकास से तात्पर्य बौद्धिक क्षमताओं के विकास से है। बुद्धि का अर्थ है अपने परिवेश को समझने बूझने और अपने व्यवहार को उसके अनुकूल बनाने की स्वाभाविक क्षमता। मानव–बुद्धि के पूर्ण विकास 18–20 वर्ष लगते है। बुद्धि के स्वरूप के विषय में बहुत मतभेद है। थोर्नडाइक का निचोड़ है– व्यक्ति की बुद्धि उसकी विशिष्ट योग्यताओं अथवा क्षमताओं का समुच्चय है। स्पीयरमैन का मत है कि व्यक्ति के बुद्धि उसकी सामान्य क्षमता है। बुद्धि सब प्राणियों में होती है। बुद्धि विकास के अनुसार कीट, पक्षी, पशु और मनुष्य का बौद्धिक स्तर क्रमशः उन्नत है। इस पूर्ण भेद के अतिरिक्त बुद्धि की तीव्रता में वैयक्तिक भिन्नता भी होती है। मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी बुद्धि ही है। स्वामी जी इस तथ्य को स्वीकार करते थे और मनुष्य के बौद्धिक विकास पर बल देते थे। बुद्धि से ही ज्ञान और ज्ञान से भक्ति तथा योग सम्भव है। स्वामी जी के अनुसार बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भाषा, गणित, विज्ञान, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, खगोलशास्त्र, जीव विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, चिकित्साशास्त्र तथा तकनीकी आदि सभी विषयों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि इन विषयों के अभाव में देश को आत्मनिर्भर नहीं बनाया जा सकता (मीना, 2019)।

(ढ) ब्रह्मचर्य का पालन

मानसिक शक्ति के विकास के लिए तथा एकाग्रता के लिए ब्रह्मचर्य पालन आवश्यक है। स्वामी जी कहते हैं कि बारह वर्ष तक अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले को शक्ति प्राप्त होती है। पूर्ण ब्रह्मचर्य से प्रबल बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त

होती है। वासनाओं को वश में कर लेने से उत्कृष्ट फल प्राप्त होते हैं। इस ब्रह्मचर्य के अभाव के कारण हमारे देश में प्रत्येक वस्तु प्रायः नष्ट हो रही है। कड़े ब्रह्मचर्य के पालन से कोई भी विद्या अल्पकाल में ही प्राप्त की जा सकती है। एक बार सुनी या जानी हुई बात को याद रखने की अचूक स्मृति आ जाती है। प्रत्येक बालक को पूर्ण ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने की शिक्षा दी जानी चाहिए, तभी उसमें श्रद्धा और विश्वास की उत्पत्ति होगी। अपवित्र कल्पना उतनी ही बुरी है, जितना अपवित्र कार्य। ब्रह्मचारी को मन, वाणी और कम से कम शुद्ध रहना चाहिए (स्वामी विवेकानन्द, 1907)।

(त) श्रद्धा भावना का विकास

स्वामी विवेकानन्द जी कहते है कि एक बार फिर से अपने में सच्ची श्रद्धा की भावना लानी होगी, आत्म विश्वास को फिर जागृत करना होगा। तभी हम उन समस्त समस्याओं को धीरे–धीरे सुलझा सकेंगे जो आज हमारे सम्मुख हैं। आज हमें इसी श्रद्धा की आवश्यकता है। मनुष्य – मनुष्य में इसी श्रद्धा का अन्तर है। अन्य किसी वस्तु का नहीं। वह श्रद्धा ही है जो एक मनुष्य को बड़ा तथा दूसरे को छोटा बनाती है। मेरे गुरूदेव कहा करते थे जो स्वयं को दुर्बल समझता है वह वास्तव में दुर्बल ही हो जाता है, और यह बिल्कुल सत्य है। तुममें यह श्रद्धा आनी चाहिए। पाश्चात्य जातियों में तुम जो कुछ भौतिक शक्ति का विकास देखते हो, वह इसी श्रद्धा का परिणाम है क्योंकि उन्हें अपने बाहुबल पर विश्वास है और यदि तुम आत्मबल पर विश्वास रखो तो परिणाम और भी फलदायक होगा।

(थ) समाज सेवा

स्वामी विवेकानन्द जी मनुष्य में ईश्वर का वास मानते थे और उसकी सेवा को ईश्वर की सेवा। उन्होंने शिक्षा के द्वारा इस विश्वास को फैलाने का प्रयास किया। स्वामी जी कहते है– हमारा राष्ट्र झोंपड़ियों में बसता है। वर्तमान समय में तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम देश के एक भाग से दूसरे भाग में जाओं और गांव–गांव में जाकर लोगों को यह समझाओ कि अब केवल आलस्य के साथ बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। उन्हें उनकी यथार्थ अवस्था का परिचय कराओ तथा कहो, भाइयो आप सब लोग उठो, जागो और कितना सोओगे। जाओ और इन्हें अपनी अवस्था सुधारने की सलाह दो तथा शास्त्रों की बातों को विस्तारपूर्वक सरलता से समझाते हुए उदात्तसत्यों का ज्ञान करा दो। उनके मन में यह बात जमा दो कि धर्म के ऊपर ब्राह्मणों की भांति उनका भी अधिकार है। सभी को, यहाँ तक कि चांडाल तक को भी इन्हीं ओजपूर्ण मन्त्रों का उपदेश दो। सरल शब्दों में जीवन के लिए आवश्यक विषयों तथा वाणिज्य, व्यापार एवं कृषि आदि की शिक्षा भी दो।

(द) राष्ट्रीय भावना का निर्माण

स्वामी विवेकानन्द जी राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता के बीच विरोधाभास नहीं देखते थे। वेदान्त के अनुसार सम्पूर्ण मानवता में एकत्व विद्यमान है परन्तु उसका विकास क्रमशः होता है। अन्तर्राष्ट्रीय भावों का विकास सुदृढ़ राष्ट्रीय गौरव के धरातल पर ही हो सकता है। वे लिखते हैं : "हे वीरों साहस का आश्रय लो और गर्व से कहो मैं भारतवासी हूँ। हर भारतवासी मेरा भाई है। तुम यह चिल्लाकर कहो कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चांडाल भारतवासी सभी मेरे प्राण है, भारत के देवी–देवता मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरे बाल्यकाल का झूला, यौवन की फुलवारी तथा बुढ़ापे की काशी है। हे भाई कहो कि भारतवर्ष की मिट्टी मेरा स्वर्ग है। भारतवर्ष का कल्याण हो और रात दिन यह कहते रहो– हे गौरीनाथ, हे जगदम्बे, मुझे मनुष्यत्व दो। हे माँ, मेरी दुर्बलता तथा कापुरूषता दूर करो, हे माँ, मुझे मनुष्य बना दो" (स्वामी विवेकानन्द, 1897)।

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन का निर्माण करना है। अतः स्वामी जी के अनुसार वही शिक्षा, शिक्षा है जो मानव का निर्माण करके उसे फलसिद्धि के लिए सक्षम बनावे और अन्त में मोक्ष की प्राप्ति में सहायक हो सके।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद ने मानव विकास के सभी पहलुओं पर अपनी विशेष ध्यान दिया। उन्होंने शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास को एक संतुलित जीवन की दिशा में प्रमोट किया। उनका संदेश था कि मानवता, धर्म, एकता, त्याग, शिक्षा और सेवा मानवता के विकास में महत्त्वपूर्ण हैं। उनकी शिक्षाएं आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण, सक्रिय जीवन, और समाज सेवा पर आधारित थीं। वे ब्रह्मचर्य को जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग मानते थे और ज्ञान और श्रद्धा को समृद्धि का मूल मानते थे। उनकी विचारधारा नेतृत्व, राष्ट्रीय एकता, मानवता, और समृद्धि के लिए एक सामाजिक संदेश लेकर आई थी। उनकी दृष्टि में मानव निर्माण उस आदर्श समाज की दिशा में होना चाहिए, जो विश्वात्मक भ्रातृत्व, त्याग भावना, और विविधता में एकता को आधार बनाता है। उनकी शिक्षाओं ने समाज में दायर वृद्धि, धर्मार्थ की प्राथमिकता, और सेवा भावना को प्रोत्साहित किया। विवेकानंद के संदेश में समाजवाद, सामाजिक न्याय, और व्यक्तिगत समृद्धि की प्रतिष्ठा को महत्त्व दिया गया।

वित्तीय सहायता और प्रायोजन : शून्य।

हितों का टकराव : हितों का कोई टकराव नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

01. मीना, पी० (2019) स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा दृष्टि और वर्तमान में प्रासंगिकता।। इंटरनेशनल एजूकेशनल जर्नल चेतना, 4(3), 57—61।

02. शर्मा, राजेन्द्र (2000). शिक्षा के दार्शनिक आधार। जयपुर : श्याम प्रकाशन।

03. स्वामी विवेकानन्द (1896). कर्म योग। न्यूयॉर्क : वेदांत प्रेस।

04. स्वामी विवेकानन्द (1896). राजा योग। न्यूयॉर्क : वेदांत प्रेस।

05. स्वामी विवेकानन्द (1899). जनाना योग। न्यूयॉर्क : वेदांत प्रेस।

06. स्वामी विवेकानन्द (1896). भक्ति योग। न्यूयॉर्क : वेदांत प्रेस।

07. स्वामी विवेकानन्द (1897). लेक्चर्स फ्रोम कोलम्बो एट अलमोडा। न्यूयॉर्क : वेदांत प्रेस।

08. स्वामी विवेकानन्द (1907). कम्पलीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानंद। नई दिल्लीः एडवेटा आश्रम।

09. स्वामी विवेकानन्द (1910). मॉय मास्टर। लंदन : लॉगमेन्स, ग्रीन एण्ड कम्पनी।